पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प : तुलनात्मक अध्ययन

5. कहानी का रचना शिल्प से त त्पर्य :

साहित्य मानवी भाव-भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है । किसी भी भावना, विचार या सिद्धांत केवल भाषा बद्ध करने से उसे साहित्य की संज्ञा नहीं मिलती । साहित्यकार भावों और विचारों का ही प्रदर्शन नहीं करता । बल्कि उसे कलात्मक रुप भी देता है । उसे एक रचना शिल्प भी प्रदान करता है । रोचकता, आकर्षण और चीर प्रभाव निर्मिती के लिए साहित्यकार शिल्प की सृष्टि करता है । रचना शिल्प साहित्य की विविध विधाओं में विविध रुपों में दिखाई देता है । रचना शिल्प का विकास साहित्य के विविध अंगो के विकास के साथ-साथ शनै: शनै: होता है । यह विकास प्रतिभा संपन्न साहित्यकारों द्वारा समय-समय पर अपने सतत के परिश्रम और प्रयोग द्वारा होता है । अपने परिक्षण, अन्वेषण और विभिन्न प्रयोगों द्वारा शिल्प संबंधित मान्यताओं को साहित्यकार पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते आए हैं और समय के साथ-साथ वह स्वीकृत भी हुई हैं । रचना शिल्प अर्थात कृति के निर्माण का ढंग अथवा उन तत्त्वों का संयोजन जिसके उपयोग से कोई कृति जन्म लेती हैं । शिल्प से तात्पर्य जैसे कि-

किसी साहित्यिक कृति की रचना प्रक्रिया से है । कृति को साकार रुप देने में जिन विधिओं, पद्धतियों और रुढ़ियों का प्रयोग किया जाए वे सारी बातें रचना शिल्प के अंतर्गत आती है । इस बारे में जैनेंद्र जी का कहना है कि - ''टैकनिक ढ़ाँचे के नियमों का नाम हैं । पर ढ़ाँचे की जानकारी उपयोगिता में है कि वह मनुष्य के जीवन में काम आए । वैसे ही टैकनिक साहित्य सृजन में योगदान के लिए है।''[1]

रचना शिल्प की दृष्टि से पद्माशा तथा सानिया जी की कहानियों का अध्ययन करने के बाद रचना शिल्प के तत्त्व के आधारपर दोनों की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन इसप्रकार है -

---

1. संपादक- प्रभाकर माचवे - जैनेन्द्र के विचार, पृ. - 157

5.1 कथावस्तु :

कथावस्तु कहानी का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जो रचना शिल्प की दृष्टि से अनिवार्य है । कहानी का लक्ष्य चाहे कुछ भी हो - भाव, विचार या वस्तु के प्रभाव की अभिव्यक्ति के लिए उसमें एक कथा का होना परम् आवश्यक है जिसके द्वारा प्रभाव पूर्ण अभिव्यक्ति की जाती है । इस कथा भाग को कहानी की 'कथावस्तु' कहते हैं । कथावस्तु के दो भाग किए जा सकते हैं - एक कथांश और दूसरा उसका विन्यास । कथानक का लक्ष्य यह होना चाहिए कि कथावस्तु प्रारंभ से विकसित होकर अंत में एक समाविष्ट प्रभाव की सृष्टि करें । सारी घटनाएँ सिमटकर अंत में मिल जाती हैं । यह समष्टि प्रभाव ही कहानी का लक्ष्य है ।

कथावस्तु में एक घटना दूसरी घटना से घनिष्ठता से जुड़ी रहे, इसे एकता और अन्विति कहते हैं । प्रत्येक कथा में कहानीकार का ध्यान इस बात की ओर विशेष रुप से रहना चाहिए की कहीं घटनाओं की श्रृंखला न टूट जाएँ । उत्तम कहानी के लिए कहानी का प्रारंभ आकर्षक और अंत प्रभाव पूर्ण होना चाहिए । इस बारे में डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का कथन हैं - 'आदि और अंत के तारतम्य में अंत को अधिक महत्त्व देना चाहिए; क्योंकि, मूलभाव के परिपाक का वही केन्द्र बिंदु है । मध्य की अपेक्षा की जा सकती हैं, आरंभ का दौर्बल्य, सहन किया जा सकता हैं, पर अंत बिगड़ा तो सब डूबा समझना चाहिए ।''[1]

रचना शिल्प की दृष्टि से देखा जाए तो कहानी का शीर्षक, कहानी के प्रतिपाद्य विषय, मूलभाव या विचार और कृतिकार की व्यक्तिगत प्रवृत्तियों का परिचायक होता हैं । उसका किसी-न-किसी रुप में कहानी के अंग विशेष से संबंध होना चाहिए । इस संबंध में पाश्चात्य सिद्धांन् मेकानोची ने लिखा हैं -

"Keep the title in its proper proposition on the nature and interest of the story"[2]

पद्माशा तथा सानिया जी की कहानियों में रचना शिल्प को देखते हुए दोनों की कहानियों में कथावस्तु दिखाई देती हैं ।

---

1. डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, पृ. - 213

2. डॉ. कृष्णदेव शर्मा - भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, पृ. - 213

पद्माशा जी की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से कथावस्तु का पूरा विकास दिखाई देता है । उनके कहानियों की कथा का प्रारंभ, उसका उन्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास हुआ हैं । कथा सरल गति से आगे बढ़ती है और क्रमश: विकस्ति होती है । इसका उत्तम उदाहरण ''छोटे शहर की शकुंतला'' है। उनके कहानियों में केवल एक ही घटना होती है और उसमें समाविष्ट घटनाओं में एकता हैं । 'उन्हें एलर्जी हैं !' कहानी में कथावस्तु में समाविष्ट घटनाओं की एकता दिखाई देती हैं । सारी घटनाएँ मिलकर अंत में एक हो जाती हैं । उनकी 'बर्फ' कहानी में प्रभावान्विति दिखाई देती हैं । उनकी 'डॉग फ्लावर' और 'कहानी और रिर्पोताज के बीच' की कथावस्तु को देखते हुए घटनाओं की एकता नहीं दिखाई देती । कहानी का प्रारंभ और अंत ही समझमें नहीं आता । इस कथावस्तु में शीर्षक और घटनाओं का तारतम्य नहीं दिखाई देता । इसी कारण यह कहानी बोझिल लगती है । शीर्षक कि दृष्टि से देखे तो 'खानाबदोश रिश्ते' कहानी की कथावस्तु शीर्षक में ही दिखाई देती है । हर कहानी के शीर्षक से जिस प्रकार से भी तात्पर्य का बोध होता है, उसका किसी न किसी रुप में कहानी के अंग -विशेष से संबंध अवश्य दिखाई देता है । कहानियों के शीर्षक में विविधता दिखाई देती हैं जैसे - 'चांद पीला क्यों है', 'पीली कली गुलाब की' , 'गर्म बिस्तर' आदि ।

सानिया जी की कहानियों में रचना शिल्प के दृष्टि से कथावस्तु का प्रारंभ आकर्षक तथा प्रभावपूर्ण अंत दिखाई देता है । कहानियों की कथावस्तु कहानी को इस तरह बांधकर रखती है कि, कहीं भी बोझील मेहसूस नहीं होती । कथावस्तु में पूरा विकास दिखाई देता है । सानिया के कहानियों की कथावस्तु प्रारंभ से अंत की ओर बढ़ते है । इसका उत्तम उदाहरण 'परिमाण', 'क्षितिज' और 'परिघाबाहेर' कहानियाँ है । उनके कहानियों के शीर्षक से जिस प्रकार से भी तात्पर्य बोध होता है, उसका किसी न किसी अंग विशेष से कथावस्तु और शीर्षक का अन्योन्याश्रय संबंध दिखाई देता है । 'परिमाण' कहानी संग्रह में संग्रहित सभी कहानियों के शीर्षक कथावस्तु के स्वरुप का विस्तृत रुप धारण करते हैं और शीर्षक से ही कथावस्तु का सार समझ में आता है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता हैं कि दोनों की कहानियों के रचनाशिल्प में कथावस्तु दर्शीत होती है । दोनों की कहानियों की कथावस्तु का पूरा विकास दिखाई देता है । दोनों के कथावस्तु में समाविष्ट घटनाओं में एकता और प्रभावान्विति

दिखाई देती हैं । पद्माशा जी की कहानियों की कथावस्तु का प्रारंभ, उसका उत्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास दिखाई देता हैं । सानिया की कहानियों में कथावस्तु प्रारंभ से ही अंत की ओर बढ़ती है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के रचना शिल्प में कथावस्तु को देखने के पश्चात् जों साम्य-वैषम्य दर्शित होते हैं वे इसप्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के रचना शिल्प में कथावस्तु विशेष महत्त्व रखती हुई दिखाई देती है ।
2. दोनों की कहानियों की कथावस्तु का धीरे-धीरे विकास दिखाई देता है ।
3. दोनों की कहानियों की कथावस्तु में समाविष्ट घटनाओं में एकता और प्रभावान्विति मिलती हैं ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की कथावस्तु में प्रारंभ, उसका उत्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास दिखाई देता है ।
- सानिया की कहानियों में कथावस्तु प्रारंभ से ही अंत की ओर बढ़ती दिखाई देती है ।

2. सानिया की कहानियों की कथावस्तु कहीं भी बोझील नहीं दिखाई देती ।
- पद्माशा की 'डॉग फ्लावर' और 'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' कहानियों की कथावस्तु बोझील दिखाई देती है ।

5.2 पात्र और चरित्र चित्रण :

रचना शिल्प और चरित्र का संबंध अटूट है । कहानी की कथावस्तु की उपादेयता पर दो मत हैं किंतु चरित्र-चित्रण के विषय में विवाद नहीं है । कहानी का प्रधान उपजीव्य मानव पात्र है, जो अपनी नाना भावनाओं, विविध कामनाओं और विभिन्न भंगिमाओं के साथ चित्रित। होकर कहानी के रचना शिल्प को गति देता है । कहानी में विषय का प्रतिपादन पात्रों के माध्यम से होता है और मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना रचना शिल्प का मूल तत्त्व हैं । मानव चरित्र का चित्र नाना विधियों द्वारा प्रकाश में आता है । पात्र और चरित्रांकन के लिए प्रमुख

रुप से दो शिल्पों का प्रयोग होता हैं -

1. वर्णनात्मक रचनाशिल्प ।
2. विश्लेषणात्मक रचनाशिल्प ।

वर्णनात्मक रचना शिल्प अपेक्षाकृत सरल है । लेखक स्वयं पात्रों का निर्माता और भाग्य विधाता होता है, वह पात्रों का केवल संचालन ही नहीं करता उनका पूर्ण निरीक्षण, परिक्षण, आलोचना कर दिशा दिग्दर्शन भी करता है । जीवन की नानाविध परिस्थितियों से उसे सैर करवाता हैं । इस शिल्प के चित्रांकन में पात्रों की बाह्यत्मकता, रंग-रुप, वेश-भूषा, रुचि-अरुचि, वंश, परंपरा, संसार, विचार, वातावरण प्रभाव आदि का सविस्तर संयोजन होता है । वर्णनात्मक रचनाशिल्प में व्यक्ति बाहर से संचलित होता है ।

विश्लेषणात्मक रचनाशिल्प में लेखक पात्रों का केवल निर्माता होता हैं । पात्र स्वयं अपने पैरों पर खड़े रहते हैं । पात्रों के जीवन संघर्ष, हर्षविवाद, मनोद्वदंव आदि आत्मनिरीक्षण और मनोविश्लेषण प्रक्रिया द्वारा पाठक के सम्मुख प्रस्तुत होता हैं ।

उत्कृष्ट चरित्र-चित्रण के लिए कहानीकार अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार किसी भी शिल्प का प्रयोग कर सकता है लेकिन उसके लिए मौलिक उद्भावना और उच्च कोटि की कल्पना का होना आवश्यक हैं । चरित्र की सफलता-असफलता किसी भी शिल्प विधिपर निर्भर न होकर कहानीकार की जीवन दृष्टि, कथापर उसकी पकड़ और प्रवाहमयिता पर अवलंबित होती हैं ।

पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से पद्माशा की छोटे शहर की शकुंतला कहानी संग्रह में कुल मिलाकर बारह कहानियाँ हैं । सभी कहानियों में प्रनुख पात्र नारी ही हैं । उनकी हर कहानी का चित्रण नारी के इर्द-गिर्द ही दिखाई देते हैं । मुख्य पात्र के साथ-साथ अन्य पात्रों की एकता के कारण चरित्र-चित्रण कथावस्तु पर छा जाता है । उनकी 'बर्फ' कहानी की दीपा के चरित्र-चित्रण द्वारा वर्णनात्मक रचना शिल्प का प्रत्यय आता हैं । 'अनुपमा' कहानी की अनुपमा, 'गर्म बिस्तर' की नीमा इन पात्रों के चरित्र-चित्रण में पद्माशा जी ने नारी की समस्याँ को सामाजिक रुप के ढ़ाँचे में डालकर दर्शाया हैं । उनकी 'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता, 'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता इनका चरित्र-चित्रण कहानीकार स्वयं वर्णनों के माध्यम से करती हैं ।

'डॉग फ्लावर' और 'उन्हें एलर्जी हैं ।' कहानियों में पद्माशा जी ने सांकेतिक प्रणाली का आश्रय लिया है । दोनों की कहानियों में वों संकेतों द्वारा कहानी के पात्रों का चित्रण करती दिखाई

देता हैं ।

सानिया की 'परिमाण' कहानी संग्रह में कुलमिलाकर नौ कहानियाँ संकलित हैं । उनके कहानियों में मुख्य रुप से जो पात्र है वह नारी है और नारी के ही दर्द-गिर्द चरित्र का चित्रण कथावस्तु को उलझाकर रखता है । उनके कहानियों का हर पात्र आपसी संबंध से निर्माण हुए जगत में विहार करता चित्रित होता है, इसका उत्तम उदाहरण 'परिमाण' की देवकी, 'चित्र' की शशी, 'क्षितिज' की यशोधरा इन पात्रों के आप्सी संबंध विशिष्ट मुल्य व्यवस्थापर आधारित हैं । कथनात्म साहित्य लिखनेवाली लेखिका विशिष्ट मूल्यसृष्टिपर आधारित एक जग निर्माण करती है । यह मूल्य सृष्टि एक बार निश्चित हो गई तो उसपर निर्भर पात्रों की कृति अपने आप निश्चित होती जाती हैं । इस बारे में हस्तक्षेप करने का हक लेखिका को नहीं मिलता । इसका उत्तम उदाहरण 'आकार' की रेणु जिसका चरित्र-चित्रण कहानी के प्रारंभ से ही निश्चित दिखाई देता है । उनकी 'स्पर्श' कहानी की सुचित्रा का चित्रण निवेदक द्वारा हुआ है । हर एक कहानी के पात्र और चरित्र-चित्रण द्वारा लेखिका का रचना कौशल्य, सर्जनशीलता तथा लेखन पद्धति की कलात्मकता दिखाई देती हैं ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया जी के कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात रचना शिल्प की दृष्टि से पात्र और चरित्र-चित्रण दोनों की कहानियों में द्रष्यव्य होता है । दोनों की कहानियों में मुख्य पात्र नारी दिखाई देती है । दोनों की कहानियों में पात्र और चरित्र-चित्रण उत्कृष्ट है तथा अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार रचना शिल्प का प्रयोग दोनों लेखिकाओं ने किया हैं । पद्माशा के कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया हैं । सानिया की कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया हैं । पद्माशा की कहानियों के पात्र का चित्रण कहानीकार स्वयं वर्णनों के माध्यम से करती हैं । सानिया की कहानियों के पात्र का चित्रण पात्र खुद आपसी संबंधों में उलझता जाता हैं, जहाँ कहानीकार को हस्तक्षेप करने का हक नहीं मिल पाता ।

विवेच्य कहानीकारों के रचना शिल्प की दृष्टि सें पात्र और चरित्र-चित्रण को लेकर जों साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया जी के कहानियों के अध्ययन के पश्चात रचना शिल्प की दृष्टि से पात्र और चरित्र-चित्रण दोनों की कहानियों में द्रष्टव्य होते हैं ।
2. दोनों की कहानियों में मुख्य पत्र नारी ही दिखाई देती है ।
3. दोनों की कहानियों का रचना शिल्प पात्र और चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखिकाओं ने अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार उत्कृष्ट पद्धति से किया हैं ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया है ।
- सानिया की कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया हैं ।

2. पद्माशा की कहानियों के पात्र का चित्रण कहानीकार स्वयंवर्णनों के माध्यम से करती हैं ।
- सानिया की कहानियों के पात्र का चित्रण पात्र खुद आपसी संबंधों में उलझता जाता हैं, जहाँ कहानीकार को हस्तक्षेप करने का हक नहीं मिल पाता ।

5.3 संवाद :

रचना शिल्प के अंतर्गत संवाद तत्त्व का होना अनिवार्य है । कहानी में रचना शिल्प की दृष्टि सें संवाद पात्रों की स्थिति पर प्रकाश डालनेवाले, इनका चरित्रोद्‌घाटन करनेवाले, कथा-विकास में सहायता करनेवाले और कहानी के वातावरण में प्रभाव की सृष्टि करनेवाले होते हैं । संवादों की सफलता के लिए यह आवश्यक हैं कि संवाद छोटे और चुस्त, व्यंजक और सांकेतिक, आकर्षक और चमत्कारपूर्ण, भावानुरुप, पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुरुप होने चाहिए । उनमें लाक्षणिकता और हास्य-विनोद का समावेश भी अपेक्षित होता हैं ।

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के रचना शिल्प में जितना कथावस्तु तथा पात्र और चरित्र-चित्रण को महत्त्व दिया हैं , उतना ही संवादों को भी दिया गया है । पद्माशा की कहानियों में संवादों के माध्यम से कथावस्तु को आकर्षक और परिस्थिति के अनुरुप दर्शित किया है । उनकी 'बर्फ' कहानी की दीपा और उसके बेटे बाबूल के संवादों में भावुकता दिखाई देती है । जैसे-दीपा

कुणाल की राह देख रही थी यह देखकर छोटा बाबूल पुछता हैं कि, ''मम्मी, क्या दादा मोनी आते होंगे ?'' जैसे उसने दीपा की चोरी पकड़ली हो । उसे गोद में लेकर चूम लेती हैं - ''क्यों रे शैतान, तू यही सब सोचता रहता है कि कौन कब आएगा ?''

''हाँ, मम्मी, हम यही छब छोंचते लहते हैं ''

''दादा मोनी को बुलाइएन, हम उनके छाथ खेलेंगे ।''[1]

इन संवादों द्वारा छोटे बच्चे की अंदर की इच्छा प्रकट होती है । उनकी कहानियों में प्रमुखत: हास्य-विनोद से युक्त संवाद मिलते हैं ।

उनकी 'चांद पीला क्यों हैं ? कहानी में मोहिनी और जी. जे. के बीच हुए संवाद इस तरह हैं - ''जल्दी खाना-वाना निपटकर छुट्टी करो - तुमसे बहुत जरुरी बातें करनी हैं ।'' वह शरारत से मुस्कराई - ''सिर्फ जरुरी बातें करनी हैं या ....?'' ''कुछ और भी करना है जानेमन''[2]

इन संवादो द्वारा कहानी में हास्य -व्यंग्य को परिचय मिलता है । 'डॉग फ्लावर' कहानी में सांकेतिक संवादों का चित्रण होता है । जैसे

'देखो, टामी कुत्ते की तरह यह फूल भी अपना मुंह खोलता है - भौंकने के लिए ।''[3] इन संवादों के द्वारा कहानी में चुस्त और व्यंजकता दिखाई देती हैं ।

पद्माशा की कहानियों में संवादों द्वारा पात्रों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया हैं, जिससे कहानियों के वातावरण के एवं प्रभाव की सृष्टि करनेवाले दिखाई देते है ।

सानिया की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से संवादों को उत्तम स्वरुप से कथावस्तु में दर्शाया हैं । सानिया की कहानियों के संवाद छोटे और चुस्त, व्यंजक और सांकेतिक, आकर्षक और चमत्कारपूर्ण, भावानुरुप, पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुरुप दिखाई देते हैं । जैसे की, ''एक पाऊल पुढे ।'' की प्राची और ऊर्मिला के बीच का संवाद पात्रों के परिस्थिति को दर्शाता है जैसे - ''तुम्ही उगीच सोडलंत ममी. आज कुठल्या कुठे असता .... त्यावेळी एवढं शिकून पुढे आलेल्या बाई म्हणून वर चढ़ला असता. मला तर फार हळहळ वाटते. इतकं शिक्षण, एक निर्मिती करु शकणारं मन, बुद्धि....सगळं फुकट गेलं....''[4] यहाँ इन संवादों द्वारा ऊर्मिला की स्थिति

---

1. पद्माशा - बर्फ, पृ. -11
2. पद्माशा - चांद पीला क्यों है । पृ. -25
3. पद्माशा - डॉग फ्लावर, पृ. -60
4. सानिया - एक पाऊल पुढे, पृ. -69

को बड़ी मार्मिकता से दर्शाया गया है । सानिया की कहानियों में मुख्य रुप से संवादों द्वारा ही कहानी की कथावस्तु को एक गति प्राप्त होती दिखाई देती है । उनकी कहानियों में गति प्राप्त करने के लिए कहानी मुड़ती स्थिति को अपनाती दिखाई देती है । जैसे की, - 'काजवे' कहानी की अनू और लीला में चित्रित संवाद

"काय मागितलंस तुझ्या देवाकडे ?' तिनं थट्टेच्या स्वरात विचारलं लीला गंभीरपणे उत्तरली, "दिवस राहू दे असं म्हणाले."

'किती वेडी आहेस. ते काय या देवाच्या हातात आहे ? ते तर राघवकडे." लीला रुमालानं डोळे पुसत त्याच गंभीरपणे म्हणाली, "पण त्याआधी काही व्हायला तर हवं ना त्यांना माझ्या बद्दल काही वाटलं तर निदान जवळ तरी येतील. मगच काही घडेल की नाही ?"[1]

इन संवादों द्वारा कहानी में प्रासंगिकता दिखाई देती है । जो व्यंजक और सांकेतिक, भावानुरुप, पात्रानुकूल है । इन संवादों द्वारा कहानी नई मोड़ लेती हैं । इसी कारण रचना शिल्प में संवादों का महत्त्व दिखाई देता हैं ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से दोनों की कहानियों में प्रसंगानुसार संवादों का चित्रण किया गया है । दोनों की कहानियों में कहानी को संवादों के कारण गति प्राप्त होती है । पद्माशा की कहानियों में संवादों का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता हैं । यहाँ कहानियों में संवाद प्रभावपूर्ण नहीं दिखाई देते । सानिया की कहानियों में संवादों में प्रासंगिकता के कारण संवाद व्यंजक और सांकेतिक दिखाई देते हैं ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से संवाद के अध्ययन के पश्चात जों साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से दोनों की कहानियों में प्रसंगानुसार संवादों का चित्रण द्रष्टव्य होते हैं ।
2. दोनों की कहानियों में कहानी को संवादों के कारण गति प्राप्त होती है ।

---

1. सानिया - काजवे, पृ. -83

वैषम्य :

1. सानिया की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से संवादों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता हैं ।

- पद्माशा की कहानियों में संवादों का चित्रण अत्यल्प हैं ।

2. पद्माशा की कहानियों के संवाद प्रासंगिक है लेकिन वह कहानी पर प्रभाव नहीं दिखा पाते ।

- सानिया की कहानियों के संवाद प्रासंगिक होते है और व्यंजक और सांकेतिक दिखाई देते हैं ।

5.4 वातावरण :

रचना शिल्प की दृष्टि से कहानी में वातावरण-चित्रण का लक्ष्य स्थानीय विशेषताओं का समावेश और कथात्मक प्रभाव की सृष्टि छोड़ती हैं। कहानीकार कहीं प्रकृति के रमणीय चित्र उपस्थित करती हैं, तो कहीं पात्रों की परिस्थितियों का बाह्य रूप अंकित करती हैं । कहानी में वातावारण या स्थानीय चित्रण को विशेष महत्त्व दिया गया हैं । रचना शिल्प के कहानी में वातावरण चित्रण के अनेक पक्ष है । इसके अंतर्गत प्रकृति-वर्णन, प्रकृति के वर्णनों द्वारा मानसिक स्थितियों का वैषम्य या साम्य कथन, कहानी के बीच-बीच में बाह्य वातावरण के संकेत और पात्रों की परिस्थितियों का चित्रण आता हैं । व्यापक अर्थ में परिस्थिति-योजना, प्रकृति-सज्जा और देश-काल-चित्रण तीनों को वातावरण कहा जाता हैं ।

पद्माशा तथा सानिया जी के कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से देखा जाए तो वातावरण का चित्रण दोनों की कहानियों में दिखाई देता हैं ।

पद्माशा कि कहानी 'चांद पीला क्यों हैं ?' की शुरुवात ही वातावरण चित्रण से होती हैं जैसे - ''नयी दिल्ली स्टेशन से बस पहाड़गंज होती हुई निकली तो वहाँ सड़क पर ट्रेफिक काफी जाम था - पैदल-स्कूटर, कारें, बसें, तांगें सब बाढ़ के आप्लावित जल की तरह उमड़े पड़ रहे थे । शाम दिया बाती जलने का समय ऐसे में दो पैरोंवाला हर परींदा अपने घोसलों को लौटना चाहता हैं । भीड़-शोरगुल सामान्य ही था इस इलाके में ।''[1] इस तरह प्रस्तुत कहानी में यहाँ प्रकृति के वर्णन

1. पद्माशा - चांद पीला क्यों है ? पृ. - 21

द्वारा मानसिक स्थिति को दर्शाया है । इसके द्वारा देश-काल-चित्रण दिखाई देता है । 'उदास गझल सी एक शाम' कहानी में वातावरण चित्रण में प्रकृति चित्रण दिखाई देता है . जैसे - ''वह एक बरसाती शाम थी । सुबह से ही आकाश में घनी बदली छायी थी । नारंगी फूलोंपर पानी की बुंदे अटक कर मोती की लड़ियां पिरो रही थी । मैं अपने कमरे में बैठी कालेज की कुछ परीक्षा पुस्तिकायें जांच रही थी । तभी बाबू जी आये ।''[1] ऐसे चित्रग द्वारा कहानियों को । रचना शिल्प के अंतर्गत वातावरण के संकेत और पात्रों की परिस्थितियों का चित्रण मिलता हैं ।

उनकी 'खानाबदोश रिश्ते' कहानी में प्रकृति के चित्रण से वातावरण को निर्मिती की गई है, जैसे - ''चांदनी रात में, शान्त पोखर नें खिले अनछुए कुमुदिनी - पुष्पों की तरह वह पूरी की पूरी खिल आई थी ।''[2] इसतरह पद्माशा की कहानियों में प्रकृति चित्रण द्वारा प्रकृति का मानविकरण किया गया है ।

सानिया की कहानियों में वातावरण निर्मिती द्वारा कहानी की कथावस्तु को एक गति प्रदान की है । उनके हर कहानी में वातावरण चित्रण दर्शीत होता हैं । सानिया की कहानियों की शुरुआत ही प्रकृति चित्रण से होती दिखाई देती है । जैसे 'परिमाण' कहानी - 'रात्री पाऊस पडून गेल्यामुळे परिसर ओला होता. भिजलेली मळसर माती आणि स्वच्छ, ताजी झाडं, कैलास प्रसन्न झाला. सकाळची नेहमीची तासभराची राऊंड आटोपून बंगल्याकडे येता-येता त्यानं फुललेली हिरवीगार बाग पाहिली. पाठीमागच्या बाजूला चढ़ण होती. तिथून येताना बंगला अगदी सुबक चित्र काढल्यासरखा दिसे. खाली गेट लावून घेत गाण्याची ओळ गुणगुणत तो पायऱ्या चढ़ला हॉलला पूर्वेच्या बाजूला खिडक्या होत्या आणि सकाळचं चकचकीत ऊन नेहमी खिडक्यांतून आत सांडत असे. पण आज उन्हात फुलल्याप्रमाणे रितू तिथे दिसली ''[3] इस तरह कहानी की शुरुवात प्रकृति-सज्जा से की हैं और प्रकृति के चित्रण से ही मानसिक स्थितियों में साम्य कथन का पात्रों के परिस्थितियों का चित्रण यहाँ दिखाई देता हैं । उनकी 'क्षितिज' कहानी में भी प्रकृति चित्रण को चित्रित किया है जैसे - ''यशोधरानं वर पाहिलं. गुलमोहराचा शेवटचा बहर शिल्लक होता.

---

1. पद्माशा - उदास गझल सी एक शाम, पृ. - 43
2. पद्माशा - खानाबदोश रिश्ते, पृ. - 53
3. सानिया - परिमाण, पृ. - 1

थोड्या शेंगा येऊ लागल्या होत्या आणि एकीकडे कोवळी हिरवी पानेही दिसत होती''[1] इस तरह के चित्रण से सानिया के कहानियों में वातावरण के अनेक पक्ष दिखाई देते हैं ।

रचना शिल्प के अंतर्गत प्रकृति वर्णन, प्रकृति के वर्णनों द्वारा मानसिक स्थितियों का साम्य-वैषम्य कथन, कहानी के बीच-बीच में बाह्य वर्णन चित्रित होता है । जैसे - 'काजवे' कहानी में चित्रित होता हैं - 'संध्याकाळचा मनोरम उजेड पसरला. गार वाऱ्यात रस्त्याकडेची झाडं हलली आणि वाळकी पानं गिरक्या घेत उतरु लागली. अनू म्हणाली, ''हा रस्ता खरा थेट टेकडीला जातो. छान चढ़ण आहे. वर बसायलाहो सुरेख जागा आहेत. अगदी वर एक देऊळपण आहे लहानसं ।''[2] इस तरह का चित्रण सानिया की कहानियों में चित्रित है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से अध्ययन के पश्चात वातावरण का चित्रण दोनों की कहानियों में द्रष्टव्य होता हैं । दोनों की कहानियों की शुरुवात प्रकृति चित्रण द्वारा होती दिखाई देती है । दोनों की कहानियों में प्रकृति चित्रण द्वारा पात्रों के मानसिक स्थितियों में और प्रकृति में साम्य दर्शाया हैं । पद्‌माशा की कहानियों में प्रकृति-सज्जा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है । सानिया की कहानियों में अत्यल्प मात्रा में चित्रित होता है ।

विवेच्य कहानिकारों के कहान्यियों के अध्ययन के पश्चात जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में रचनाशिल्प की दृष्टि से अध्ययन के पश्चात वातावरण का चित्रण दोनों कि कहानियों में द्रष्टव्य होता हैं ।
2. दोनों की कहानियों की शुरुआत प्रकृति चित्रण से होती दिखाई देती हैं ।
3. दोनों की कहानियों में प्रकृति चित्रण द्वारा पात्रों के मानसिक स्थितियों में और प्रकृति चित्रण में साम्य दर्शाया हैं ।

---

1. सानिया - क्षितिज, पृ. - 55
2. सानिया - काजवे, पृ. - 80-81

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में प्रकृति-सज्जा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों में अत्यल्प मात्रा में चित्रित होता हैं ।

5.5 भाषा -शैली :

रचना शिल्प की दृष्टि से कहानी सामान्य मानव-जीवन अधिक निकट है । इसलिए कहानी की भाषा-शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक होनी चाहिए । वातावरण की अनुभूति का ध्यान रखना तो आवश्यक ही है । कहानी की भाषा ऐसी हो जो वस्तु-पात्र और चरित्र तथा कहानी के लक्ष्य को भली प्रकार अभिव्यक्त कर सके । सजीवता और व्यावहारिकता उसका सबसे बड़ा गुण है । कहानियों की भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग तथा शब्दों की उपयुक्त योजना भी ध्यान देने योग्य हैं ।

कहानी के शैली-तत्त्व के अंतर्गत इस बात का विचार भी किया जाता है कि कहानी किस प्रकार कही गई हैं या उसकी अभिव्यक्ति शैली या रचना-विधान किस प्रकार का है । इस दृष्टि से कहानी की निम्नलिखित शैलियाँ मानी जाती हैं -

1. आत्मकथनात्मक शैली ।
2. कथात्मक शैली ।
3. संवादात्मक शैली ।
4. पत्रात्मक शैली ।
5. डायरी शैली ।
6. मिश्रित शैली ।

पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में रचना शिल्प में भाषा- शैली का चित्रण दिखाई देता है ।

पद्‌माशा की कहानियों में भषा-शैली स्वाभाविक दिखाई देती है । सरस तथा रोचक भाषा-शैली का चित्रण दिखाई देता है । पद्‌माशा की कहानियों की भाषा में मुहावरों का प्रयोग चित्रित नहीं दिखाई देता । उनकी कहानियोंपर पद्‌माशा खुद बिहार की होने के कारण बिहारी बोली भाषा का प्रभाव दिखाई देता है । 'रोज-रोज' कहानी में इसका चित्रण द्रष्टव्य होता हैं । जैसे -

''सुरजी को रोटी का कौर भी बिना छाछ के तोड़ना नहीं सुहाता था । अब तो दूध दही के दर्शन भी दुर्लभ हो गये - गैया, भैंसे बिना बीमारी-सिमरी के मरी जाती हैं । मुई अपनी जबानी को भी कीड़े लग गये हैं ।''[1] इस तरह का चित्रण दिखाई देता हैं । इसमें बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है ।

उनकी कहानियों में लोकोक्तियों का प्रयोग दिखाई देता है । 'रोज-रोज' कहानी में - ''अखफोड़ होते ही कोयल का बच्चा भाग जाता है और वह सूने घोंसले की तरफ ताकती रह जाती हैं ।''[2] ऐसा चित्रण भाषा-शैली में दिखाई देता है ।

उनकी कहानियों में गालियों का प्रयोग चित्रित है । 'रोज-रोज' कहानी में चित्रित होती है जैसे - ''मुई अपनी जबानी को भी कीड़े लग गये हैं ।''[3] और ''अब छोड़ भी येना नुच ।''[4] 'गर्म बिस्तर' कहानी में - हरामजादी, धौंस दिखाती है, चल निकल कुतिया ।''[5] ऐसा चित्रण दिखाई देता है ।

भाषा-शैली के अंतर्गत पद्माशा की कहानियों पर अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रभाव दिखाई देता है । जैसे 'बर्फ' कहानी में - ''आइ वांट टु बी फ्री फ्रोम ऑल बरडंस्''[6]

'जस्टीफाई'[7]

'कान्वेन्ट'[8]

'बसस्टॉप'[9]

मेट्रोपोलिटन [10] आदि शब्द दिंखाई देते हैं ।

---

1. पद्माशा - रोज-रोज, पृ. -32
2. पद्माशा - वही, पृ. - 33
3. पद्माशा - रोज-रोज, पृ. - 32
4. वही पृ. - 33
5. पद्माशा - गर्म बिस्तर, पृ. - 82
6. पद्माशा - बर्फ, पृ. - 12
7. वही पृ. - 17
8. वही पृ. - 18
9. पद्माशा - चांद पीला क्यों हैं ? पृ. -24
10. वही - पृ. -26

अरबी भाषा का प्रभाव भी दिखाई देता है ।

'जिद्द' [1]

'रक़म'[2]

'औरत'[3]

बंगाली भाषा का प्रयोग दिखाई देता हैं ।

'बांट'[4]

'बाजारो'[5]

इसतरह भाषाओं का प्रभाव पद्माशा जी की कहानियों में दिखाई देता है । कहानी के शैली-तत्त्व के अंतर्गत इस बात का विचार रचना शिल्प के अंतर्गत किया जाये तो उनकी कहानियों में आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग किया गया हैं ।

सानिया की कहानियों में भाषा इतनी सरल, सहज, तरलता एवं ऋजुता से युक्त है कि यह कई तरह के आस्वाद देती हैं । इसकी एकतानता कही भी टूटती नहीं । पारिवारिक प्रसंग्रो को बयान करते समय वह कही भी बोझिल नहीं होती । प्रेम प्रसंग्रों के दौरान शिथिल नहीं होती । कहानियों की भाषा लालित्य उत्पन्न करती हैं, कविता की भाषा से प्रभावित होने के कारण कहानियों की भाषा रसात्मक दिखाई देती हैं । सानिया की कहानियों में शैली तत्त्व के अंतर्गत कहानी की अभिव्यक्ति - शैली या रचना-विधान संवादात्मक शैली के अंतर्गत आता है । जैसे उनकी कहानियों में पत्रात्मक शैली तथा मिश्रित शैली का प्रयोग भी चित्रित होता है । सानिया जी की कहानियाँ मराठी भाषा में हैं । उनकी कहानियों में की पर आधुनिकता मराठी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है । उनकी कहानियों में कहीं भी मुहावरें या लोकोक्तियों का प्रयोग नहीं दिखाई देता । लेकिन उनकी भाषा वस्तु, पात्र और चरित्र तथा कहानी के लक्ष्य को भली प्रकार से अभिव्यक्त कर सकती है । जैसे 'क्षितिज' कहानी में चित्रित भाषा शैली - ''कदाचित क्षमेला तिथे जागाच नसावी त्यांनी कितीही 'आपल्या' संस्कृतीचा अभिमान बाळगला तरीही केवळ निराळ्या, गोऱ्या ख्रिश्चन म्हणून जन्मलेल्या

---

1. पद्माशा - उदास गझल सी एक शाम, पृ. -45
2. पद्माशा - रोज-रोज, पृ. -33
3. पद्माशा - गर्म बिस्तर, पृ. - 82
4. वही पृ.- 82
5. वही पृ.- 83

परदेशी माणसाशी संधान बांधलं एवढ्च त्याचा रोष आहे ना ! की मुलगी हजारो मैलांवर हरवली हा ?... यशोधराला वाटलं''[1] इसतरह उनकी कहानी के किसी भी वाक्यों दुवारा कहानी का कथ्य समझ में आता है, इतनी सरल एवं जटिल भाषा शैली दिखाई देती है ।

उनकी कहानियों को शैली तत्त्व की दृष्टि से देखे तो मिश्रित शैली का प्रयोग दिखाई देता है । आत्मकथनात्मक शैली का उत्तम उदाहरण 'स्वरुप' कहानी दुवारा दिखाई देता हैं । 'परिमाण' कहानी मिश्रित शैली का उदाहरण दिखाई देता है । स्वप्न चित्र का प्रयोग उनकी 'आकार' कहानी में दिखाई देता है ।

सानिया की कहानियोंपर अंग्रेजी का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता हैं । जैसे - अंकल[2], नर्व्हस[3], ग्लॅमर[4], रिसेप्शन[5], पॉप्युलर[6], आर्किटेक्चर[7], आदि ।

उनकी कहानियों में अन्य भाषा का भी प्रयोग दिखाई देता हैं ।

संस्कृत - पुरविणे[8], बघणे[9], आदि ।

अरबी - हारणे[10], मेहनत[11] आदि ।

सानिया जी की कहानियों में काव्य पंक्तियों का प्रयोग दर्शीत होता हैं । जैसे - 'काजवे' कहानी में चित्रित किया हैं -

'उजेडाची फसवी निशाणी
आणि काळोखाचे ही भासच
.... चमकते क्षणिक काजवे मग
की ते ही वाटेवरचे आभासच ?'[12]

---

1. सानिया - क्षितिज, पृ. - 47
2. सानिया - परिमाण, पृ. - 1
3. वही - पृ. - 13
4. वही - पृ. - 21
5. वही -
6. सानिया - एक पाऊल पुढे, पृ. - 64
7. वही, पृ. - 65
8 सानिया - स्पर्श, पृ. - 27
9. सानिया - चित्र, पृ. - 116
10. सानिया - स्वरुप, पृ.- 104
11. सानिया - आकार, पृ. - 151
12. सानिया - काजवे, पृ. - 81

इस तरह उनकी कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से भाषा-शैली को कथ्य, पात्र और चरित्र चित्रण, संवाद और वातावरण को जितना महत्त्व होता है, उतना ही महत्त्व दिखाई देता हैं ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन ।

पद्माशा तथा सानिया जी की कहानियों का रचना शिल्प की दृष्टि से अध्ययन करने के बाद उनकी कहानियों में भाषा-शैली के तत्त्व एक समान द्रष्टव्य होते हैं । दोनों के कहानियों की भाषा शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक है । दोनों की कहानियों की भाषा में मुहावरें नहीं मिलतें । दोनों की कहानियों में आत्मकथानात्मक शैली में चित्रण द्रष्टव्य है । दोनों की कहानियों में भाषा-शैली पर अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रयोग किया गया हैं । पद्माशा की कहानियों की भाषा-शैली पर बिहारी बोली का प्रभाव दिखाई देता है । सानिया की कहानियों में भाषाशैलीपर आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में भाषा -शैली की दृष्टि से अध्ययन के बाद जों साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया जी की कहानियों का रचना-शिल्प की दृष्टि से अध्ययन करने के बाद उनकी कहानियों में भाषा-शैली के तत्त्व द्रष्टव्य होते हैं ।
2. दोनों के कहानियों की भाषा-शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक दिखाई देती है ।
3. दोनों की कहानियों की भाषा-शैली में मुहावरों का चित्रण नहीं मिलता ।
4. दोनों की कहानियों में आत्मकथनात्मक शैली का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं ।
5. दोनों की कहानियों में भाषा-शैली पर अंग्रेजी भाषा का ज्यादा प्रयोग किया गया है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की भाषा-शैली पर बिहारी बोली का प्रभाव दिखाई देता है ।
   - सानिया की कहानियों की भाषा-शैली पर आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है।
2. पद्माशा की कहानियों की भाषा शैली में गालियों का चित्रण दिखाई देता है।
   - सानिया की कहानियों में गालियों का चित्रण नहीं मिलता ।
3. पद्माशा की कहानियों की भाषा-शैली में अरबी भाषा का प्रयोग दिखाई देता है।
   - सानिया की कहानियों की भाषा-शैली में संस्कृत भाषा का प्रयोग दिखाई देता है।

4. पद्माशा की कहानियों में कथनात्मक शैली का प्रयोग दर्शीत होता है।

- सानिया की कहानियों में मिश्रित शैली का प्रयोग दर्शीत होता है ।

5.6 उद्देश्य :

रचना शिल्प की दृष्टि से कहानी का उद्देश्य क्या है , इस का उत्तर अनेक प्रकार से दिया जा सकता है । आज के कहानी का रचना शिल्प एक सजग साहित्यिक विधा है । इसलिए केवल मनोरंजन ही उसका उद्देश्य नहीं हो सकता । कहानी जीवन सत्यों का मार्मिक उद्घाटन करती हैं, चरित्रों पर प्रकाश डालती हैं साथ-साथ आज के मानव-मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है । व्यंग्य द्वारा समस्याओं पर प्रकाश डालती हैं और शिवत्व का विधान करती है । रचना शिल्प की दृष्टि से कहानी का उद्देश्य यह है कि, यदि किसी कहानी में मानव-प्रकृति और चरित्र, मानव-मूल्यों, मनुष्य-मनुष्य के शाश्वत संबंधों, भावों और अनुभूतियों तथा उनके विविध रुपों की व्याख्या नहीं की गई हैं जो उसे आधुनिक अर्थ में कहानी नहीं कहा जा सकता अत: मानव-चरित्र का विश्लेषण निश्चितत: कहानी के उद्देश्य का लक्ष्य स्वीकार किया जा सकता है । विभिन्न कहानियों में यह उद्देश्य विभिन्न रुपों में देखने को मिलेगा तब भी उसकी एकता इस बात में है कि कहानी का लक्ष्य मानव-मन के विश्लेषण द्वारा प्रभाव उत्पन्न करता है । यह उद्देश्य जिस कहानी में पूरा हो वह उत्कृष्ट कोटि की कहानी का रचना शिल्प होगा ।

पद्माशा और सानिया की कहानियों के रचना शिल्प की दृष्टि से देखा जाए तो उनकी प्रत्येक कहानियों का उद्देश्य द्रष्टव्य होता है । पद्माशा की कहानियों में उद्देश्य के कारण कथ्य, पात्र और चरित्र चित्रण, संवाद, वातावरण और भाषा-शैली को एक अर्थ प्राप्त होता है । पद्माशा की हर कहानियों को कोई ना कोई उद्देश्य चित्रित है । जैसे 'बर्फ' कहानी में माता-पिता के झगड़ो के कारण बच्चें की भावना को ठेस पहुँचती दिखाई देती है । इससे यह उद्देश्य मिलता है कि बच्चों का जीवन बिखेरना या सँभालना यह माता-पिता की आपसी संबंधों पर निर्भर हैं । इस तरह उनकी हर कहानी में उद्देश्य मनुष्य-मनुष्य के शाश्वत संबंधों द्वारा दिखाई देता हैं । उनकी कहानियों में विविध समस्याओं द्वारा उद्देश्य को दर्शाया है । जैसे - 'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' में नारी को जिंदगी भर किसी ना किसी के बंधन में ही रहना पड़ता है बल्कि वो चाहे या ना चाहे । यह दर्शीत होता है । 'चांद पीला क्यों है' कहानी मानवी स्वभाव के खोखलेपन को दर्शाती है । 'उन्हें

एलर्जी हैं' कहानी राजनीतिक खोखलेपन को चित्रित करती है। 'रोज-रोज' कहानी द्वारा मालिकों द्वारा शोषण से समाज में निम्नवर्ग की स्थिति को दर्शाया है। 'अनुपमा' कहानी में दहेज बलि द्वारा समाज में लोभीवृत्ती को चित्रित कर उसके द्वारा उद्देश्य दिया गया है। पद्माशा ने अपनी कहानियों में मानव-चरित्र का विश्लेषण निश्चिततः से कहानी के उद्देश्य को दर्शाया हैं।

सानिया की कहानियों में मानवी जीवन यथार्थ के मार्मिक चित्रण से उद्देश्य को चित्रित किया है। व्यंग्य और समस्याओं से चरित्र पर प्रकाश डालकर उद्देश्य को कहानियों में दर्शाया हैं। उनकी 'परिमाण' कहानी से मानवी रिश्तों के उलझनों द्वारा यौन अतृप्ति को चित्रित किया है। 'स्पर्श' द्वारा नारी पुरुष से किस हद्द तक समझौता कर सकती है यह चित्रित होता हैं। 'क्षितिज' द्वारा अंतरदेशीय विवाह को चित्रित किया है। 'एक पाऊल पुढे' पुरुष द्वारा नारी को दबोच के रखने का प्रयास दिखाया गया है। 'काजवे' में समाज में आर्थिक कमजोरी के कारण नारी को कितना समझौता करना पड़ता है यह चित्रित किया गया है। 'स्वरुप' और 'परिघाबाहेर' कहानी सो नारी अगर कुछ बनना चाहे तो कुछ भी करके बन सकती है यह चित्रित है। 'चित्र' कहानी द्वारा पारिवारिक रिश्तों के कमजोर कड़ी का चित्रण किया गया है। 'आकार' कहानी में खोखले रिश्तों का चित्रण उद्देश्य में मिलता है।

सानिया की कहानियाँ मुख्य रुप से पारिवारिक रिश्तों की उलझनों का चित्रण करती हैं। जो पाठक को अपनी लगती हैं और यहीं उनके कहानी द्वारा दिया गया उद्देश्य सफल होता है।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से उद्देश्य का चित्रण द्रष्टव्य होता है। दोनों की कहानियों में नारी पात्रों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया गया है। दोनों की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों के उलझनों द्वारा उद्देश्य को चित्रित किया है। पद्माशा की कहानियों में समाज मस्याओं को चित्रित किया हैं। सानिया की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों की समस्याओं को चित्रित किया गया है।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात रचना शिल्प के उद्देश्य को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं - वे इसप्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में रचनाशिल्प की दृष्टि से उद्देश्य का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।
2. दोनों की कहानियों में नारी पात्रों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया गया है ।
3. दोनों की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों के उलझनों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में समाज के हर घटनाओं द्वारा समस्योओं से उद्देश्य को चित्रित किया है ।
- सानिया की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों की समस्याओं द्वारा उद्देश्य को चित्रित किया है ।

निष्कर्ष : समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प में जो साम्य-वैषम्य निष्कर्ष रूप में परिलक्षित हुआ हैं, वे इस प्रकार हैं -

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता हैं, कि दोनों की कहानियों के रचना शिल्प में कथावस्तु दर्शित होते है । दोनों की कहानियों की कथावस्तु का पूरा विकास दिखाई देता है । दोनों के कथावस्तु में समाविष्ट घटनाओं में एकता और प्रभावान्विति दिखाई देती हैं । पद्माशा जी की कहानियों की कथावस्तु का प्रारंभ, उसका उत्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास दिखाई देता है । सानिया की कहानियों में कथावस्तु प्रारंभ से ही अंत की ओर बढ़ती है ।

दोनों की कहानियों में पात्र और चरित्र-चित्रण द्रष्टव्य होते हैं । दोनों की कहानियों में मुख्य पात्र नारी ही दिखाई देती है । दोनों की कहानियों में पात्र और चरित्र-चित्रण उत्कृष्ट है । अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार रचना शिल्प का प्रयोग दोनों लेखिकाओं ने किया हैं । पद्माशा के कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया हैं । सानिया की कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक रचना शिल्प के प्रयोग स्वयं वर्णनों

के माध्यम से करती है । सानिया की कहानियों के पात्रों का चित्रण पात्र खुद आपसी संबंधों में उलझता जाता है, जहाँ कहानीकार को हस्तक्षेप करने का हक नहीं मिल पाता ।

दोनों की कहानियों में संवादों का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं । दोनों की कहानियों में कहानी को संवादों के कारण गति प्रदान होती हैं, यह दर्शीत होता हैं । पद्माशा की कहानियों में संवादों का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता हैं । पद्माशा की कहानियों में संवाद प्रभावपूर्ण नहीं दिखाई देते । सानिया की कहानियों में संवादों में प्रासंगिकता के कारण संवाद व्यंजक और सांकेतिक दिखाई देते हैं ।

दोनों की कहानियों में वातावरण का चित्रण रचना शिल्प के अंतर्गत द्रष्टव्य होता है । दोनों कहानियों की शुरुआत प्रकृति चित्रण से होती दिखाई देती है । दोनों की कहानियों में प्रकृति चित्रण द्वारा पात्रों के मानसिक स्थितियों में और प्रकृति चित्रण में साम्य दर्शाया हैं । पद्माशा की कहानियों में प्रकृति-सज्जा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है । सानिया की कहानियों में अत्यल्प मात्रा में चित्रित होता है ।

दोनों की कहानियों में भाषा-शैली के तत्त्व रचना शिल्प में द्रष्टव्य होते है । दोनों के कहानियों की भाषा शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक हैं । दोनों की कहानियों की भाषा शैली में मुहावरों का चित्रण नहीं हैं । दोनों की कहानियों में आत्मकथनात्मक शैली में चित्रण द्रष्टव्य होता है । दोनों की कहानियों में भाषा शैली पर अंग्रेजी भाषा का ज्यादा प्रयोग किया गया है । पद्माशा की कहानियों की भाषा-शैली पर बिहारी बोली भाषा का प्रभाव दिखाई देता हैं । सानिया के कहानियों की भाषा शैली पर आधुनिकता का प्रभाव चित्रित होता है ।

दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से उद्देश्य का चित्रण द्रष्टव्य होता है । दोनों की कहानियों में नारी के पात्रों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया है । दोनों की कहानियों में नारी पात्रों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया गया है । दोनों की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों के उलझनों द्वारा ही उद्देश्य को चित्रित किया है । पद्माशा की कहानियों में समाज के हर घटनाओं द्वारा समस्याओं से उद्देश्य को चित्रित किया है । सानिया की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों की समस्याओं द्वारा उद्देश्य को चित्रित किया है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में रचना शिल्प के अंतर्गत प्राप्त घटकों के चित्रण में जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं , वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के रचना शिल्प में कथावस्तु दर्शित होती हैं ।
2. दोनों की कहानियों की कथावस्तु का पूरा विकास दिखाई देता है ।
3. दोनों की कहानियों की कथावस्तु में समाविष्ट घटनाओं में एकता और प्रभावान्विति दिखाई देती हैं ।
4. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से पात्र और चरित्र-चित्रण द्रष्टव्य होते हैं ।
5. दोनों की कहानियों में मुख्य पात्र नारी ही दिखाई देती है ।
6. दोनों की कहानियों का रचनाशिल्प पात्र और चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखिकाओं ने अपनी इच्छा और रूचि के अनुसार उत्कृष्ट पद्‌धति से किया हैं ।
7. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से संवादों का चित्रण द्रष्टव्य हैं ।
8. दोनों की कहानियों में कहानी को संवादों के कारण गति प्राप्त होती है यह स्पष्ट होता हैं ।
9. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से अध्ययन के पश्चात वातावरण का चित्रण दोनों की कहानियों में द्रष्टव्य होता हैं ।
10. दोनों की कहानियों की शुरुआत प्रकृति चित्रण से होती दिखाई देती है ।
11. दोनों की कहानियों में प्रकृति चित्रण द्‌वारा पात्रों के मानसिक स्थितियों में और प्रकृति चित्रण में साम्य दर्शाया है ।
12. दोनों की कहानियों में भाषा-शैली के तत्त्व द्रष्टव्य होते है ।
13. दोनों के कहानियों की भाषा-शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक दिखाई देती है ।
14. दोनों की कहानियों की भाषा-शैली में मुहावरों का प्रयोग नहीं मिलता ।
15. दोनों की कहानियों में आत्मकथनात्मक शैली का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।
16. दोनों की कहानियों में भाषा-शैलीपर अंग्रेजी भाषा का ज्यादा प्रयोग किया गया है ।
17. दोनों की कहानियों में रचनाशिल्प की दृष्टि से उद्‌देश्य का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।
18. दोनों की कहानियों में नारी के पात्रों द्‌वारा ही उद्‌देश्य को चित्रित किया गया है ।
19. दोनों की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों के उलझनों द्‌वारा ही उद्‌देश्य को चित्रित किया हैं ।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों की कथावस्तु का प्रारंभ, उसका उत्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास दिखाई देता हैं ।

- सानिया की कहानियों में कथावस्तु प्रारंभ से ही अंत की ओर बढ़ती दिखाई देती है ।

2. सानिया की कहानियों की कथावस्तु कहीं भी बोझील नहीं दिखाई देती ।

- पद्‌माशा की 'डॉग फ्लावर' और 'कहानी और रिपोर्ताज' के बीच 'इन कहानियों की कथावस्तु बोझील दिखाई देती है ।

3. पद्‌माशा की कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्‌वारा किया गया है ।

- सानिया की कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्‌वारा किया गया है ।

4. पद्‌माशा की कहानियों के पात्र का चित्रण कहानीकार स्वयं वर्णनों के माध्यम से करती है ।

- सानिया की कहानियों के पात्र का चित्रण पात्र खुद आपसी संबंधों में उलझता जाता है, जहाँ कहानीकार को हस्तक्षेप करने का हक नहीं मिल पाता ।

5. सानिया की कहानियों में रचनाशिल्प की दृष्टि से संवादों का चित्रण पर्याप्त मात्रा मे दिखाई देता है ।

- पद्‌माशा की कहानियों में संवादों का चित्रण अत्यल्प दर्शीत होता है ।

6. पद्‌माशा की कहानियों के संवाद प्रासंगिक होते हैं लेकिन वह कहानियोंपर प्रभाव नहीं दिखा पाते ।

- सानिया की कहानियों के संवाद प्रासंगिक होते है और व्यंजक और सांकेतिक दिखाई देते है ।

7. पद्‌माशा की कहानियों में प्रकृति-सज्जा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों में प्रकृति का अत्यल्प चित्रित है ।

8. पद्‌माशा की कहानियों की भाषा शैली पर बिहारी बोली का प्रभाव दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों की भाषा शैली पर आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है ।

9. पद्माशा की कहानियों की भाषा शैली में गालियों का चित्रण दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों में गालियों का चित्रण नहीं मिलता ।

10. पद्माशा की कहानियों की भाषा शैली में अरबी भाषा का प्रयोग दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों की भाषा शैली में संस्कृत भाषा का प्रयोग दिखाई देता है ।

11. पद्माशा की कहानियों में कथनात्मक शैली का प्रयोग मिलता है ।

- सानिया की कहानियों में मिश्रित शैली का प्रयोग मिलता है ।

12. पद्माशा की कहानियों में समाज के हर घटनाओं द्वारा समस्याओं से उद्देश्य को चित्रित किया है ।

- सानिया की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों की समस्याओं द्वारा उद्देश्य को चित्रित किया है ।

****